— चतुर्थ अध्याय —

"राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित कथोपकथन और देहात वातावरण"

"राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित कथोपकथन ... देशकाल वातावरण

कथोपकथन की विशेषताएँ :-

उपन्यास में कथावस्तु और चरित्र-चित्रण के साथ कथोपकथन को भी अनन्यसाधारण महत्व है। कथोपकथन कथानक को भी आगे बढ़ाता है और चरित्र को भी प्रकट करता है।

कथोपकथन की निम्नलिखित विशेषताएँ उपन्यास की सफलता के द्योतक है।

१) कथोपकथन संक्षिप्त, यथावश्यक, स्वाभाविक और स्मरणीय होना चाहिए।

२) कथोपकथन परिस्थितियों से मेल खाता हो।

३) कथोपकथन को पात्रों के बौध्दिक एवं सांस्कृतिक स्तर के अनुरूप उसे होना चाहिए।

४) कथोपकथन का विषय कथावस्तु से सम्बन्ध एवं पात्रों के मानसिक धरातल के अनुरूप होना चाहिए।

५) कथोपकथन में सरलता और रोचकता होनी आवश्यक है, यह तभी हो सकता है जब उसका विषय अत्यन्त एकांगी और वैयक्तिक न हो।

६) कथोपकथन में व्यक्तित्व के निजीपन की छाप और पात्रानुकूल वैचित्र्य के साथ स्वाभाविकता, लाघव, सजीवता और सार्थकता आवश्यक होती है।

इसप्रकार एक सफल उपन्यास के कथोपकथन में उपरलिखित विशेषताओं का होना आवश्यक है।

कथोपकथन की विशेषताओं के आधारपर "राग-दरबारी" उपन्यास का विवेचन :-

श्रीलाल शुक्ल जी का "राग-दरबारी" एक सफल व्यंग्यप्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में उपन्यास के सभी तत्वों का निर्वाह हुआ है। इस उपन्यास की कथावस्तु में विविध घटनाओं का चित्रण है, क्योंकि लेखक का मूल उद्देश विविध ग्रामीण-सामाजिक समस्याओं का चित्रण करना है तथा उनपर व्यंग्यप्रहार करना है।

इस उपन्यास में विविध स्तर के पात्र आते है, जिनका चरित्र-चित्रण घटनाओं के अनुकूल हुआ है। हर पात्र अपनी अलग-अलग विशेषताओं का परिचय देते है। इस उपन्यास के कथोपकथन कथावस्तु को विकसित करने के साथ-साथ चरित्रों की मानसिक स्थितिपर भी प्रकाश डालते है।

कथोपकथन की विशेषताओं के आधारपर "राग-दरबारी" का विवेचन निम्न रूपमें किया जाता है।

१) श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास के कथोपकथन संक्षिप्त, यथावश्यक और स्वाभाविक है। शुक्ल जी ने पात्रों के कथोपकथन पर अधिक बल दिया है। संक्षिप्त तथा स्पष्ट कथोपकथन के ही कारण चरित्रों की मानसिक स्थिति स्पष्ट रूप से उद्घाटन हुआ है।

वैद्यजी, बद्री पहलवान, रूप्पन बाबू तथा रंगनाथ के कथोपकथन संक्षिप्त तथा स्वाभाविक जान पड़ते है। वैद्यजी के कथोपकथन उनके विचारों और कार्यों को स्पष्ट करने में मदत करते है। इनके कथोपकथन कथावस्तु और उपन्यास की उद्देश की पूर्ति करते है। इस उपन्यास के पात्र अधिकतर निम्न सामाजिक वर्ग के प्रतिक है। भ्रष्ट राजनीति का सही चित्रण कथोपकथन के माध्यम से प्रकट किया गया है। रूप्पन अपने पिता के भ्रष्ट रूप को उजागर करता है, —

" देखो दादा, यह तो पोलिटिक्स है, इसमें बड़ा-बड़ा कमीनापन चलता है। यह तो कुछ भी नहीं हुआ। पिताजी जिस रास्ते में है उसमें इससे भी आगे कुछ करना पड़ता है। दुश्मन को जैसे भी हो, चित्त करना चाहिए। " [१]

इसप्रकार रंगनाथ जब शिवपालगंज ट्रक में बैठकर जा रहा था, तब वर्तमान शिक्षा प्रणालीपर बातें हो रही थी। तब कहता है, --

"वर्तमान शिक्षा प्रणाली एक कुत्तिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।" [२]

अतः "राग-दरबारी" के कथोपकथन संक्षिप्त, स्वाभाविक तथा पात्रों की मानसिक स्थिति प्रकट करने में सफल है।

२) "राग-दरबारी" उपन्यास के कथोपकथन परिस्थितियों से मेल खाने वाले है। इस उपन्यास में विविध सामाजिक समस्याओंपर व्यंग्य प्रहार करनेवाले है। व्यंग्य प्रहार करते समय उपन्यासकारने विविध परिस्थितियों के अनुकूल पात्रों के कथोपकथन पर बल दिया है।

उपन्यासकारने रिश्वतखोरी और चोरी में छिपी अनैतिकता को उजागर किया है। वर्तमानकालीन भ्रष्टाचारी वृत्तिपर सफल व्यंग्य किया है। यहाँ के कथोपकथन परिस्थिति के अनुकूल है, --

" घुस लेना भी अब बड़ी जलालत का काम है। इसमें कुछ नया नहीं है। लेनेवाले और न लेनेवाले अब समझ लो, बराबर है, सबकी हालत खराब है। " [३]

इस उपन्यास के कथोपकथन परिस्थितियों के अनुकूल मार्मिक बन पड़े है। ग्रामीण अनपढ़ जनता को भ्रष्ट राजनीतिने गुमराह कर लिया है, --

" हमें कौन वोट का अचार डालता है? ले जाय! जिसे जरूरत है। " [४]

३) "राग-दरबारी" उपन्यास में कथोपकथन चरित्रों के बौध्दिक और सांस्कृतिक स्वरों को प्रस्तुत करते है। यह एक सामाजिक व्यंग्यप्रधान उपन्यास है। इसमें आनेवाले चरित्र निम्न सामाजिक वर्ग के प्रतिक है। वैद्यजी राजनीति के खिलाड़ी है तथा उनके बेटे उनके कृत्यों में योगदान देते है। भ्रष्ट राजनीतिका यहाँ बोलबाला है। वैद्यजी के बौध्दिक स्तर को उनके कथोपकथन स्पष्ट करेते है।

शुक्ल जी ने वैद्यजी के राजनीति की बैठक का कथन इसप्रकार किया है, --

" असली शिवपालगंज वैद्यजी की बैठक में था। " [5]

वैद्यजी छंगामल कॉलेज के मैनेजर और को-आपरेटिव युनियन के डायरेक्टर थे। इन्हें पदों का लालच था, लेकिन शुक्ल जी उनकी इस वृत्ति का चित्रण इस-प्रकार करते है, —

" वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। " [6]

इसीप्रकार रूप्पन रंगनाथ को वैद्यजी की राजनीति का परिचय देते हुए कहता है, —

" देखो दादा, यह तो पोलिटिक्स है, इसमें बड़ा-बड़. झीनापन चलता है। यह तो कुछ भी नहीं है। पिताजी जिस रास्ते में है, उसमें इससे भी आगे कुछ करना पड़ता है। दुश्मन को जैसे भी हो, चित करना चाहिए। " [7]

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास के कथोपकथन पात्रों की बौध्दिकता को स्पष्ट करते है।

४) "राग-दरबारी" के कथोपकथन कथावस्तु से संबंधित और पात्रों की मानसिक धरातल के अनुसार है। शुक्ल जी ने पात्रों के कथोपकथन से कथावस्तु को विकसित करते है। इस उपन्यास में विविध घटनाओं का चित्रण है, फिर भी उसमें एकात्मता है। कथोपकथन के माध्यम से कथावस्तु और चरित्रों की मानसिक स्थिति को उजागर किया है।

शुक्ल जी ने शिवपालगंज इस गाँव को उपन्यास के कथा का केंद्र माना है। इस गाँव प्रमुख नेता वैद्यजी है। वैद्यजी राजनीति के खिलाड़ी है। उनका चित्रण शुक्ल जी ने कथावस्तु विकास के लिए इसप्रकार किया है, —

" सीधे के लिए बिल्कुल सीधे है और हरामी के लिए खानदानी हरामी। " ८

रंगनाथ जिसने एम.ए. किया है। वह रिसर्च को घास खोदने का काम समझता है। एक दृष्टिसे रंगनाथ इस उपन्यास का नायक है। सभी घटनाएँ उसके सामनेही ही घटती है। उपन्यासकार उसके मानसिक स्थिति का चित्रण इसप्रकार करता है --

" वर्तमान शिक्षा पध्दति रास्ते में पड़ी कुत्तिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है। " ९

प्रिंसिपल वैद्यजी का चेला है। शिक्षा पध्दति में भ्रष्टाचार करनेवाला यह प्रमुख चरित्र है। वह कॉलेज में अध्यापकों में गुटबन्दी करता है। सरकारी अनुदानों को हड़प करने में वह होशियार है। शुक्ल जी ने उसकी मानसिक स्थिति को इसप्रकार उजागर की है, --

" चार-चार बहिनों की शादी करनी है। एक कोडी पल्ले नहीं है। अगर वैद्यजी कान पकड़कर कालेज से निकाल दे, तो मांगे भीख तक न मिलेगी। " १०

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास के कथोपकथन कथावस्तु और पात्रों के मानसिक स्थिति के अनुकूल प्रस्तुत किए है।

५) "राग-दरबारी" उपन्यास की कथोपकथनों में शुक्ल जी ने रोचकता और सरसता को हीन नहीं होने दिया है। यह शुध्द व्यंग्यात्मक रचना है। इस उपन्यास के कथोपकथन सरस और रोचक बन गये है।

श्रीलाल शुक्ल जी का उद्देश सामाजिक विषमताओंपर व्यंग्य प्रहार करना है। अपने उद्देश की पूर्ति उन्होंने चरित्रों के उत्कृष्ट कथोपकथनों के माध्यम से की है। उपन्यास पढ़ते समय ही पात्रों के कथनोद्वा उनके कार्यों, गुणो, मानसिक स्थितियों का बोध होता है।

शिवपालगंज के पुलिस थाना, न्याय-पंचायत का सत्यम उपन्यास में है। दारोगा, सिपाही सभी कामचोर हैं और वैद्यजी के कृपापात्र है। उक्त कथोपकथन

वैद्यजी के नीति का परिचय देते हुए भी रोचक बन गये है, —

" रिश्वत, चोरी, डकैत, अब तो सब एक हो गया है, पुरा साम्यवाद है। " [११]

इस उपन्यास में मास्टरों की हीनता का सही चित्रण मिलता है। प्रिंसिपल छन्ना मास्टर और मालवीय को न्याय नहीं देते। उनका चित्रण मार्मीक है। इस संदर्भ में प्रिंसिपल के संवाद स्पष्ट और रोचक है, —

"प्राइवेट स्कुल की मास्टरी वह तो पिसाई का काम है ही। भागोगे कहाँ तक ? " [१२]

इस उपन्यास के अंत में रंगनाथ शिवपालगंज और शिवपालगंजीय वातावरण को देखकर भाग जाना चाहता है। शुक्ल जी ने रंगनाथ के मनोवृत्ति चित्रण में रोचकता और सरसता दिखाई है, —

" तुम मँझोली हैसियत के मनुष्य हो और मनुष्यता के कीचड़ में फँस गये हो। तुम्हारे चारों ओर कीचड ही कीचड़ है, उस दुनिया में रहो, जिसमें बहुतसी बुध्दिजिवी आँख मुँहकर पड़े है। होटलों और क्लबों में भागो। " [१३]

इसप्रकार शुक्ल जी ने पात्रों की मानसिक स्थिति को उजागर करने के लिए सरस और रोचक संवादों का प्रयोग किया है।

६) "राग-दरबारी" उपन्यास में पात्रों के व्यक्तित्व की छाप उनके कथोपकथन के माध्यम से पड़ी है। उपन्यासकारने विशिष्ठ चरित्र का चित्रण करते समय उसके गुणों और कार्यों के अनुसार उनके संवादो के द्वारा प्रस्तुत किया है।

वैद्यजी के प्रति चित्रित संवाद उनके व्यक्तित्व को उद्घाटित करते है, -

" सीधे के लिए बिल्कुल सीधे है और हरामी के लिए खानदानी हरामी। " [१४]

प्रिंसिपल के कथोपकथन में उनकी व्यक्तित्व की गहरी छाप पाठकोंपर पड़ती है। वे छन्ना मास्टर के प्रति अन्याय करते है। वैद्यजी की चापलुसी करना ही उनका काम है, —

" प्राइवेट स्कुल की मास्टरी वह तो पिसाई का काम है ही।
भागोगे कहाँ तक ? " [१५]

शिवपालगंज के नैराश्यपूर्ण वातावरण का प्रभाव रंगनाथ पर पड़ता है और थोड़े ही दिनों में रंगनाथ महसुस करने लगता है कि, —

" शिवपालगंज महाभारत की तरह है, जो कहीं नहीं है वह यहाँ है। " [१६]

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास के कथोपकथन पात्रों के व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से उजागर करती है। उपन्यासकारने उनके कथोपकथन के माध्यम से सामाजिक विषमताओं पर तीखा व्यंग्य प्रहार किया है।

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "राग-दरबारी" उनका सफल ग्रामीण सामाजिक व्यंग्यप्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास का उद्देश्य विविध सामाजिक समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना है। शुक्ल जी ने विविध पात्र तथा घटना घटनाओं को लेकर सम-सामायिक समस्याओंपर व्यंग्य किया है।

इस उपन्यास में चरित्रों का उद्घाटन कथोपकथनों से स्पष्ट रूप से किया है। शुक्ल जी ने कथोपकथन की विशेषताओं को ध्यान में रखकर चरित्रों की व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है।

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास के कथोपकथन सरल, स्पष्ट, रोचक और प्रभावपूर्ण है। कथोपकथन उपन्यास के पात्रों के मानसिक स्थितियों को स्पष्ट रूपसे चित्रित करते है। कथोपकथन की दृष्टिसे शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" में अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है।

"राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित देशकाल वातावरण :-

देशकाल वातावरण का स्वरूप :-

उपन्यास मानव-जीवन का चित्र है जिसमें प्रधानतया मनुष्य के चारित्र्य का सजीव वर्णन रहता है। निश्चित है कि मनुष्य का सम्बन्ध अपने युग, समाज, देश और परिस्थितियों से रहता है। मानव के चारित्र्य की पृष्ठ-भूमिरूप में देश-काल का चित्रण उसका एक आवश्यक अंग है। जितनी ही वास्तविक पृष्ठभूमि में चरित्रों को प्रकट किया जायेगा, उतनी ही गहरी विश्वासनीयता का भाव जगाया जा सकता है।

देशकाल वातावरण का चित्रण दो रूपों में होता है --

१) समान और अनुकूल रूप में

२) चरित्रों के लिए विषम और प्रतिकूल रूप में।

पात्रों और उद्देश्य के अनुरूप उपन्यासकार दोनों ही स्थितियों का चित्रण कर हमारी कल्पना और अनुभूति को सजग करता है। सामाजिक उपन्यासों में तो लेखक प्रायः अपने युग की देखी-सुनी और अनुभूत पृष्ठभूमि देता है। पाठक के समसामायिक होने के कारण उसको आँकने और विश्वास करने का अवसर रहता है।

अतः हम देखते है कि कथानक को वास्तविकता का आभास देने के साधनों में वातावरण मुख्य है। उसके लिए स्थानिय ज्ञान अत्यंत आवश्यक होता है। देशकाल वर्णन में देश-विरुद्धता और काल विरुद्धता के दोष नहीं आने चाहिए। देशकाल का चित्रण वास्तविक उद्देश्य कथानक और चरित्र का स्पष्टीकरण है। अतः उसे इसका साधन ही होना चाहिए, स्वयंसे न बन जाना चाहिए। अतः स्थानिक विशेषताओं का ध्यान रखते हुए प्रकृति की भावानुकूल पृष्ठभूमि देना उपन्यास की रोचकता की वृध्दि में सहायक होता है।

इसप्रकार उपन्यास में देशकाल-वातावरण कथावस्तु और पात्रों के अनुरूप होना चाहिए और उसमें उपन्यास की उद्देशमूर्ति के अनुरूप होना चाहिए।

"राग-दरबारी" में देशकाल, वातावरण का चित्रण :-

"राग-दरबारी" श्रीलाल शुक्ल जी का एक सामाजिक व्यंग्यप्रधान उपन्यास है। उपन्यासकारने इस उपन्यास में विविध घटनाओं को लेकर कथानक का विकास किया है। "शिवपालगंज" गाँव को केंद्र में रखकर उपन्यासकारने वर्तमानकालीन विविध ग्रामीण सामाजिक समस्याओं को प्रकट किया है। इस उपन्यास में अनेक स्तर के पात्रों को लेकर विविध समसामायिक समस्याओं का चित्रण किया है। लेकिन ऐसा करते समय शुक्ल जी ने देश-काल वातावरण की ओर अधिक ध्यान दिया है। देश और युग के चित्रण द्वारा वर्तमान कालीन सामाजिक विषमताओंपर करारा व्यंग्य प्रहार किया है।

"राग-दरबारी" उपन्यास का देशकाल वातावरण भारतीय है। श्रीलाल शुक्ल जी ने भारत देश के वर्तमान युग का सही चित्रण इस उपन्यास में किया है। "राग-दरबारी" उपन्यास का वातावरण कथानक और पात्रों के अनुकूल है। कहीं भी देशकाल वातावरण को दुषित नहीं होने दिया है।

इस उपन्यास की कथावस्तु में ग्रामीण जीवन का चित्रण किया गया है। "शिवपालगंज" यह गाँव शहर से पंद्रह मील दुरी पर है। उस गाँव के वातावरण का यथार्थवादी चित्रण शुक्ल जी ने किया है —

> " गाँव के किनारे एक छोटा सा तालाब का - गन्दा कीचड़ से भरा-पुरा बद-बुदार बहुत क्षुद्र। घोड़े, गधे, कुत्ते, सुअर उसे देखकर आनंदित होते है। "[१७]

इसप्रकार शिवपालगंजीय वातावरण का वास्तविक चित्र शुक्ल जी ने खींचा है। मेले वाली देवी का वास्तविक चित्रण इसप्रकार है -- "राग-दरबारी" की मेलेवाली की मूर्ति किसी सिपाही की मूर्ति थी लेकिन गाववाले उसे देवी के रूप में ही स्वीकार करते थे। संपूर्ण विसंगतियों और विद्रुपताओं को देखने से पता चलता है कि मानों, —

> " सारे मुल्क में शिवपालगंज ही फैला हुआ है। " [१८]

श्रीलाल शुक्ल जी ने देश की वर्तमान स्थिति का यथार्थवादी चित्रण रंगनाथ के माध्यम से किया है। उस वातावरण का सही चित्रण रंगनाथ के मुख से इस प्रकार व्यक्त किया है, —

" ड्राइवर साहब, तुम्हारा गियर तो बिल्कुल अपने देश की हुकूमत जैसा है। ..... उसे चाहे जितनी बार टाप गियर में डालो, दो गज चलते ही फिसल जाती है और लौटकर अपने खाँचे ही में आ जाती है। " [१९]

इस कथन में वर्तमान भारतीय समाज की भ्रष्ट नीति का वास्तववादी चित्रण है।

"शिवपालगंज" गाँव का यथार्थवादी चित्रण करते समय पात्रों की व्यक्तित्व का भी यथार्थवादी चित्रण इस उपन्यास में प्रस्तुत है, —

" बड़ी मुश्किल से कोट और कमीज के बटन खोलकर उसने अन्दर से जनेऊ खींचा तब वह काफी न खींच पाया तो उसने गर्दन एक ओर झुकाकर किसी तरह जनेऊ का एक अंश कान पर उलझा लिया, फिर कसी हुई हाफपैंट से संघर्ष करता हुआ, किसी तरह घुटनों पर झुककर अरहर के खेत में अमोनियम सल्फेट युक्त पानी की धार गिराने लगा। " [२०]

इस उपन्यास मे शिवपालगंज के वातावरण के अनुकूल पात्रों का चित्रण किया है। यहाँ छोटे पहलवान का चित्रण इसप्रकार है, —

" एक झाडी के पास पानी गिराने की नियत से गार और वहाँ एक आदमी को खुले में कुछ और ठोस चीज गिराते हुए देखकर उसे गाली देता है। " [२१]

"राग-दरबारी" में देशकाल वातावरण के चित्रण में शुक्ल जी ने स्थानियता को अवशेष नहीं होने दिया है। शिवपालगंज के वातावरण का यथार्थवादी चित्रण किया है। उस गाँव का वातावरण ग्रामीण होने के कारण वास्तववादी चित्रण ही किया है। वैद्यजी उस गाँव के प्रमुख नेता है। वे राजनीति के खिलाडी है। अनेक पदों के अधिकारी है इसीकारण शिवपालगंज में जो कुछ भी होता है वह वैद्यजी

के कहने के अनुसार ही होता है, इसलिए शुक्ल जी ने उनकी पृष्ठभूमि में कहा है —

" असली शिवपालगंज वैद्यजी के बैठक में था। " २२

"राग-दरबारी" में वर्तमान युग का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। रंगनाथ, जो एम.ए. का छात्र है, शिवपालगंज में आकर अनुभव करने लगता है कि, —

" शिवपालगंज महाभारत की तरह है, जो कहीं नहीं है वह यहाँ है। " २३

इस उपन्यास में वर्तमान कालीन ग्रामीण समाज का यथार्थवादी रूप प्रस्तुत किया है।

" राग-दरबारी" में इतिहास पुराण की व्यंग्यात्मक व्याख्या के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। " २४

इस उपन्यास में कथावस्तु और पात्रों के अनुकूल देशकाल वातावरण का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष :-

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास के कथोपकथन सरल, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण है। "राग-दरबारी" में चरित्रों को उद्घाटित करने के लिए कथोपकथनों स्पष्ट प्रयोग किया है। कथोपकथन की दृष्टि से श्रीलाल शुक्ल ने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है।

श्रीलाल शुक्ल जी कृत "राग-दरबारी" ग्रामीण सामाजिक समस्याओं का उपन्यास है। अतः उपन्यासकारने इस उपन्यास में शिवपालगंज इस गाँव को कथा के केंद्र में रखकर विविध भारतीय ग्रामीण समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। ऐसा करते समय शुक्ल जी ने कथा केंद्र की पृष्ठभूमि में देश और युग को ध्यान में रखा है। वर्तमानकालीन ग्रामीण समाज की विविध समस्याओं का चित्रण युग के

अनुक्रम प्रस्तुत किया है। ऐसा करते समय पात्रों के अनुरूप ही वातावरण को तैयार किया है।

इसप्रकार "राग-दरबारी" उपन्यास में कथोपकथन और देशकाल वातावरण का कथावस्तु और घटनाओं के अनुकूल प्रयोग हुआ है।

संदर्भ सूची :-

१) श्रीलाल शुक्ल - "राग-दरबारी" - पृष्ठ २२१।
२) — वही — - पृष्ठ १५।
३) — वही — - पृष्ठ १४१।
४) — वही — - पृष्ठ १५७।
५) — वही — - पृष्ठ ३१।
६) — वही — - पृष्ठ ३५।
७) — वही — - पृष्ठ २२९।
८) — वही — - पृष्ठ ३५।
९) — वही — - पृष्ठ १५।
१०) — वही — - पृष्ठ २२१।
११) — वही — - पृष्ठ १६।
१२) — वही — - पृष्ठ ११३।
१३) — वही — - पृष्ठ ११३।
१४) — वही — - पृष्ठ ३५।
१५) — वही — - पृष्ठ ११३।
१६) — वही — - पृष्ठ ११३।
१७) — वही — - पृष्ठ २२५।
१८) — वही — - पृष्ठ ४०५।
१९) — वही — - पृष्ठ ११।
२०) — वही — - पृष्ठ १४३।

२१) श्रीलाल शुक्ल, — "राग-दरबारी" - पृष्ठ १५०।
२२) — वही — - पृष्ठ २८।
२३) — वही — - पृष्ठ ३१।
२४) डॉ॰ गिरिधर शर्मा — "हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन" - पृष्ठ २६३।

.....